विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष २५५०, आश्विन पूर्णिमा, ७ अक्तूबर, २००६ वर्ष ३६ अंक ४

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

छिन्द सोतं परक्कम्म, कामे पनुद ब्राह्मण।
सङ्खारानं खयं ञत्वा, अकतञ्ञूसि ब्राह्मण॥
धम्मपद– ३८३.

हे ब्राह्मण! (तृष्णारूपी) स्रोत को काट दे, पराक्रम कर कामनाओं को दूर कर। संस्कारों के क्षय को जान कर, हे ब्राह्मण! (तू) अकृत (निर्वाण) का जानने वाला हो जा।

पावन प्रतीक

निर्माणाधीन विशाल विश्व चैत्य हमारी असीम कृतज्ञता का पावन प्रतीक है। असीम कृतज्ञता सम्राट अशोक और उसके गुरु अरहंत मोग्गलिपुत्त तिस्स के प्रति, जिसने तीसरी और अंतिम संगायन भगवान के परिनिर्वाण के २१८ वर्ष पश्चात ईसा पूर्व ३२६ में भारत में करायी। इसमें पिछली दो संगीतियों की भांति बुद्धवाणी पुनः प्रामाणिक रूप से स्वीकृत और स्थापित की गयी। विपश्यना साधना के साथ इस वाणी को सम्राट के पुत्र अरहंत महेंद्र और पुत्री संघमित्रा के साथ सिंहल देश में भेजा। इसी प्रकार अरहंत सोण और उत्तर के साथ इन्हें स्वर्णभूमि (बर्मा और थाईलैंड) भेजा।

यदि न भेजी गयी होती तो क्या होता? सम्राट अशोक के लगभग पचास वर्ष बीतते-बीतते राजधानी पाटलिपुत्र की राजगद्दी एक ऐसे अनार्य व्यक्ति के हाथ लग गयी जिसने चंद षडयंत्रकारियों के साथ मिल कर बुद्ध की शिक्षा और शिक्षकों पर कहर ढाना आरंभ कर दिया। तिपिटक को कंठस्थ रखने वाले अधिकांश आचार्य और इसी प्रकार लगभग सभी विपश्यना आचार्य मारे गये। जो बचे वे पड़ोसी देशों में जाकर अपनी जान बचा पाये। इस प्रकार इस देश से वाणी और विपश्यना दोनों नेस्तनाबूद कर दी गयी। यदि सम्राट अशोक ने वाणी और विद्या को पड़ोसी देशों में न भेज दिया होता तो संसार में कहीं भी उनका अस्तित्व नहीं बचा रहता। परंतु सच यह है कि श्रीलंका और बर्मा तथा थाईलैंड, कंबोडिया और लाओस के कुछ मनीषी भिक्षुओं ने वाणी को सहस्राधिक वर्षों तक गुरु-शिष्य परंपरा के आधार पर इसके मौलिक शुद्ध रूप में संभाल कर रखा और इसी प्रकार विपश्यना विद्या को साधक आचार्यों ने बर्मा में उसे आज तक जीवित रखा। यदि यह न हो पाता तो इन दोनों का विश्व में कहीं अस्तित्व ही न रह पाता।

उपकार मानते हैं दूरदर्शी भिक्षुप्रवर लैडी सयाडो का, जिन्होंने देखा कि आगामी १०० वर्ष बीतते-बीतते, भगवान के २५०० वर्ष के प्रथम शासन का समय पूरा होगा और उसी समय बर्मा में सुरक्षित रखी हुई यह वाणी और यह विद्या अपने उद्गम देश भारत लौटेगी और तत्पश्चात सारे विश्व में फैलने लगेगी। उन्होंने यह भी देखा कि यह महत्त्वपूर्ण कार्य किसी गृहस्थ के हाथों ही होगा। अतः भिक्षुप्रवर ने सदियों बाद पहली बार गृहस्थों के लिए विपश्यना का दरवाजा खोला। उन्होंने सयातैजी के रूप में पहला गृहस्थ विपश्यना आचार्य शिक्षित कर समाज में स्थापित किया। इस पद की गरिमा को सयातैजी ने अत्यंत कुशलता और दक्षतापूर्वक निभाया जिससे कि वे भिक्षुओं सहित कई गृहस्थों के लिए प्रथम गृहस्थ आचार्य के रूप में स्वीकृत हुए। सयातैजी ने सयाजी ऊ बा खिन को विपश्यना विद्या सिखायी जो दूसरे समर्थ गृहस्थ विपश्यनाचार्य स्वीकृत हुए। सयाजी ऊ बा खिन को इस परंपरागत मान्यता पर पूरा भरोसा था कि बुद्ध शासन के २५०० वर्ष पूरे होने पर यह विद्या निश्चितरूप से भारत लौटेगी और वहां इसके पांव जम जाने पर सारे विश्व में फैलेगी। वे यह भी मानते थे कि बर्मा पर भारत का वृहत ऋण है और हमें यह ऋण चुकाना है। समय आ गया है जबकि यह अनमोल विद्या अपने उद्गम देश में शीघ्र लौटायी जाय।

सन १९५४, २५०० वर्ष के प्रथम बुद्धशासन का अंतिम वर्ष था, और सन १९५५, २५०० वर्ष के द्वितीय बुद्धशासन का प्रथम वर्ष था। यह देख कर वे अत्यंत प्रसन्न हुए कि इसी वर्ष एक अनगढ़ पत्थर उनके संपर्क में आया। चौदह वर्षों तक इस कुशल शिल्पी ने इस पत्थर को तराश-तराश कर, घिस-घिस कर इसके बदसूरत रूप को खूबसूरत मूरत के रूप में सँवारा, निखारा, जिससे कि वह इस महान कलाकार की महान कृति का सही प्रदर्शन साबित हो सके। उस पुण्यशाली पारस को एक ऐसे मूल्यहीन लोहे का टुकड़ा मिला, जिसे उसने स्पर्श कर-करके मूल्यवान सोना ही नहीं बना दिया, बल्कि अपने प्रतिनिधि के रूप में एक अनमोल पारस ही बना दिया।

भारत का ऋण चुकाने के लिए उसे एक भारतीय मूल के बरमी नागरिक की आवश्यकता थी जो भारत जाकर लोगों को उनकी अपनी बोली में धर्म सिखा सके, विपश्यना का अभ्यास करा सके। उनका यह शिवसंकल्प पूरा हो सकने का समय आया। उनका यह धर्मपुत्र अपने धर्मपिता की मंगल आकांक्षा पूरी करने में लग गया। भले आरंभ में उसके मानस में अपनी योग्यता और क्षमता के बारे में बहुत संदेह और झिझक थी। परंतु उसे तो कुछ करना नहीं था। काम तो धर्म ही कर रहा था। धर्मपिता ही कर रहे

थे। धर्मपुत्र तो महज इस विशाल योजना का एक माध्यम मात्र बना। इस महान संत के दृढ़ संकल्प को पूरा होना ही था। निमित्त कोई भी बनता।

इस द्वितीय बुद्धशासन का आरंभ होते-होते भारत ही नहीं, विश्व भर में विपश्यना का प्रकाश फैलने लगा। हमारा कितना बड़ा कल्याण हुआ। क्या हुआ होता यदि अशोक ने उपकार करके यह विद्या और यह वाणी भारत के बाहर न भेजी होती, यदि बर्मा के भिक्षु संघ ने उसे संभाल कर न रखी होती? यदि भिक्षुप्रवर लैडी सयाडो जी ने गृहस्थों के लिए इस विद्या का द्वार न खोला होता। तब तो यह विद्या बर्मा तक ही सीमित रह जाती। बाहर कैसे निकलती? लेकिन इसे तो बाहर निकलना ही था। इस निमित्त जो माध्यम चुनना था वह चुन लिया गया। लैडी सयाडो जी का उपकार अनंत है और साथ-साथ गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का उपकार अनंत है कि उनकी असीम करुणा के कारण भारत ने अपनी खोयी हुई अनमोल विद्या पुनः प्राप्त की और भारत के बाहर सारे विश्व के लिए भी विपश्यना सीखने का मार्ग प्रशस्त हुआ। पिछले लगभग चार दशकों में भारत के बाहर जिन-जिन व्यक्तियों ने विपश्यना विद्या का प्रसारण किया है, उन सबका हृदय गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के प्रति असीम कृतज्ञता के भावों से विभोर रहता है।

जो विश्व विपश्यना स्तूप निर्माणाधीन है वह हम सब की कृतज्ञता का पावन प्रतीक है।

हमारा ही नहीं, द्वितीय बुद्ध शासन में जिन-जिन लोगों को विपश्यना प्राप्त हुई और भविष्य में प्राप्त होगी उनकी कृतज्ञता का भी पावन प्रतीक साबित होता रहेगा। यह विशाल स्तूप निश्चित रूप से सहस्राधिक वर्षों तक पावन प्रतीक के रूप में कायम रहेगा। इसी कारण इसे सीमेंट-कंकरीट से न बना कर, भारत की पुरातन स्थापत्यकला के आधार पर केवल पत्थरों से बनाया जा रहा है। २० फीट मोटी दीवार के अंदर २८० फीट व्यास और ९० फीट की ऊंचाई वाले पगोडा-गुंबज के इस प्रथम खंड का निर्माण बिना किसी स्तंभ के हो पाया है। यही अपने आप में सारे संसार के लिए एक अजूबा है, एक आश्चर्य है। भारत की वास्तुकला का उज्वल उदाहरण है। जब ३२० फीट ऊंचाई का यह कीर्तिमान स्तूप पूर्णतया निर्मित हो जायगा तब यह और अधिक विस्मयवर्धक होगा। केवल वास्तुकला की विस्मयता का ही महत्त्व नहीं है। इसमें भारत की पुरातन विद्या विपश्यना का दिव्य दर्शन होगा। यह सच्चाई सिद्ध होगी कि आज और अनागत काल के सभी विपश्यी साधकों ने अपनी जिम्मेदारी समझते हुए विश्व के लिए ऐसा अपरिमित प्रेरणास्पद कार्य पूरा किया है। सदियों तक सारे विश्व में विपश्यना के विस्तार का पुण्य अर्जित किया है। यह सम्राट अशोक और भदंत मोग्गलिपुत्ततिस्स से लेकर अरहंत लैडी सयाडो, गृही आचार्य सयातैजी और परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के असीम उपकारों का प्रकाश केवल भारत में ही नहीं, सारे विश्व में उजागर करता रहेगा।

विशाल धर्मचैत्य के प्राथमिक एक तिहाई का निर्माणकार्य सरल नहीं था। अत्यंत दुष्कर था। दिन-रात अथक परिश्रम करके जिन लोगों ने इसे पूरा किया, उनके उत्साहभरे पुण्यार्जन का कोई माप नहीं, कोई मोल नहीं, कोई तोल नहीं। इसी प्रकार इसके निर्माण में लगी विपुल धनराशि के लिए जिन लोगों ने अपने सामर्थ्यानुसार एक पत्थर की कीमत से लेकर कई सौ, कई हजार, कई लाख, कई करोड़ का दान दिया और गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के असीम उपकारों को याद कर, दान की धर्मचेतना जगा कर जो पुण्यार्जन किया उसका भी कोई माप नहीं, कोई मोल नहीं, कोई तोल नहीं।

पुरातनकाल से एक मान्यता चली आ रही है कि जिस किसी चैत्य का निर्माण आरंभ किया जाय, उसे पूर्ण अवश्य किया जाय। और यह तो ऐसा चैत्य है जो भगवान की पावन अस्थि धातु को गर्भ में धारण किये हुए है। यह स्तूप हमारे महान उपकारक सयाजी ऊ बा खिन के प्रति हमारी असीम कृतज्ञता को उद्घोषित करता रहेगा। सदियों और सहस्राब्दियों तक भारत के ही नहीं, सारे संसार के लोग याद करते रहेंगे कि हमारे पड़ोसी देश बर्मा में एक ऐसा महान संत हुआ जिसके मनमानस में एक ही प्रबल धर्मकामना रही कि बर्मा में सहस्राब्दियों से सुरक्षित रखी गयी विपश्यना विद्या भारत लौटे और भारत के साथ-साथ सारे विश्व का कल्याण करे। उनका यह स्मारक अनगिनत लोगों के मानस में धर्म जगाने का कारण बनेगा। इसके निर्माण के लिए दिये सहयोग का पुण्यफल सचमुच अमूल्य होगा, अनमोल होगा।

कल्याण मित्र,

स. ना. गो.

पगोडा

बहुप्रचलित पगोडा न पालि शब्द है, न संस्कृत, न हिंदी और न ही भारत की किसी अन्य भाषा का। न ही यह श्रीलंकन, बरमी, थाई, कंबोडियन, लाओसी अथवा चीन, जापान आदि बुद्धानुयायी देशों की किसी भाषा का शब्द है। देखें, इसकी उत्पत्ति कैसे हुई!

जिस चैत्य के गर्भ में तथागत अथवा किसी अरहंत के अस्थिधातु निधानित किये गये हों वह **"धातु-गब्भ"** धातुगर्भ कहलाता था। समय बीतते-बीतते सभी चैत्यों को 'धातुगब्भ' कहा जाने लगा। इसका अपभ्रंश 'धगब्भ' या 'धगोबा' या 'डगोबा' होने लगा। पिछली सहस्राब्दि में जब यूरोप के पुर्तगाली नाविक व्यापारी पूरब की ओर आये तब भारत में उन्हें कोई चैत्य देखने को नहीं मिला। परंतु श्रीलंका में स्थान-स्थान पर चैत्य देखने को मिले। यह उनके लिए एक नया अनुभव था। लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि "दगोबा" है। नया शब्द, नया उच्चारण उन्हें कठिन लगा। वे दगोबा को **'पगोडा'** कहने लगे। आगे जाते हुए अन्य बुद्धानुयायी देशों में गये तो उन्हें वहां भी बहुत चैत्य देखने को मिले, जिन्हें वे 'पगोडा' ही कहने लगे। समय बीतते-बीतते जिन चैत्यों को चेतिय, चेदीगो या स्तूप कहा जाता था, उन सबको वे पगोडा कहने लगे। और आगे चल कर यह 'पगोडा' शब्द विदेशियों में ही नहीं, स्थानीय लोगों में भी प्रचलित हो गया।

धन्य कृतज्ञता

अशोक के असीम उपकार की ऐतिहासिक घटना को सुन कर एक साधक के मन में कृतज्ञता की गंभीर चेतना जागी और उसने हमें यह सूचना भेजी है कि वह एक विशाल अशोक स्तंभ का निर्माण करके इस विशाल विश्व पगोडा के परिसर में स्थापित करेगा, जो कि सारनाथ के मूल स्तंभ की आकृति और परिमाप के अनुकूल बनाया जायगा। इसके साथ-साथ उसके पास धर्मचक्र प्रवर्तन का चक्र भी निर्मित कर स्थापित किया जायगा। कृतज्ञता की इस विपुल धर्मचेतना को पूर्ण करने में लगभग ७-८ लाख रुपयों की लागत आयेगी। सम्राट अशोक के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के इस निश्चय में दानी साधक का प्रभूत मंगल समाया हुआ है।

ग्लोबल पगोडा का उद्घाटन समारोह एवं धातु निधान

आगामी २९ अक्तूबर, २००६ को, विशाल पगोडा का जो गुम्बज तैयार हुआ है उसके सिरे पर भगवान बुद्ध की पावन धातु (अस्थि अवशेष) स्थापित की जायगी। **प्रातः ६ बजे भिक्षु-भोजन** तथा **संघदान** का कार्यक्रम है। **प्रातः ९ बजे** नव निर्मित गुंबज-हॉल में कार्यक्रम आरंभ हो जायगा। इस अवसर पर म्यंमा के कुछ प्रमुख भिक्षुओं के अतिरिक्त भारत तथा अन्य पड़ोसी देशों के भिक्षु और देश-विदेश के अनेक गण्यमान्य अतिथिगण उपस्थित होंगे। भिक्षुओं द्वारा आशीर्वाद और धातु-वंदना के पश्चात पूज्य गुरुजी द्वारा इस विशाल पगोडा के पावन उद्देश्य और आवश्यकता पर एक संक्षिप्त प्रवचन होगा। कार्यक्रम के अंत में लगभग १ बजे अतिथिगण भोजन ग्रहण करेंगे। इन सभी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं। दूर से आने वाले कुछ विशिष्ट आमंत्रित अतिथियों के लिए एक अतिथिशाला की व्यवस्था की गयी है, जिसमें स्थान बहुत सीमित है। अतः सभी साधकों से निवेदन है कि वे आसपास में कहीं अपने निवास तथा समय पर पहुँचने के लिए अनुकूल साधन की व्यवस्था स्वयं करके इस महत्त्वपूर्ण वृहत आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करें। कृपया अपने आने की सूचना अवश्य दें और वहां तक पहुँचने संबंधी या किसी अन्य आवश्यक जानकारी के लिए श्री. डेरेक पेगाडो से फोन- २८४५२१११, २८४५२२६१ पर संपर्क करें। (पगोडा तक पहुँचने के लिए विस्तृत विवरण नीचे लिखा है।)

२९ अक्तूबर की सायं से २ नवंबर की दोपहर तक पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में पगोडा परिसर में ही सहायक आचार्यों की कार्यशाला और पूज्य गुरुजी के साथ उनके प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम रखा गया है। सभी आचार्य, वरिष्ठ स.आ. एवं स.आ. इसका लाभ अवश्य लें। इसके लिए कृपया सभी क्षेत्रीय आचार्य अपने क्षेत्र से आने वाले सहायक आचार्यों की सूची धम्मगिरि पर श्री दिलीप देशपांडे को ०९४२२२-६५९१९ पर फोन करके अथवा ईमेल-- info@giri.dhamma.org से अवश्य नोट करा दें।

सभी सहायक आचार्य जो अपने प्रश्न प्रस्तुत करना चाहते हैं, कृपया डॉ. एच. वी. गानला को निम्न पते पर भेजें, जिन्हें संयोजित करके वे पूज्य गुरुजी को प्रस्तुत करेंगे। संपर्क - डॉ. एच. वी. गानला, ७-१-२, जेल रोड, येरवडा, पुणे-४११ ००१. ईमेल - hganla@gmail.com

ग्लोबल पगोडा का पूरा पता इस प्रकार है -

ग्लोबल पगोडा, ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, एस्सेल वर्ल्ड के समीप, उत्तान, गोराई क्रीक, बोरीवली (प०), मुंबई- ४०००९१. फोन - २८४५२१११, २८४५२२६१. फैक्स- ००-९१-२२-२८४५२११२. ईमेल- globalpagoda@hotmail.com

ग्लोबल पगोडा तक पहुँचने के लिए उपलब्ध साधन -

१. मालाड रेल्वे स्टेशन से बस रूट नं. २७२ द्वारा मारवे बीच पहुँचें। बस-किराया रु. ५, अथवा ऑटोरिक्शा से रु. ३२ (मारवे जेटी तक)। बस से उतर कर एस्सेलवर्ल्ड के लिए फेरी (मोटर-बोट) के लिए रु. २५ प्रति व्यक्ति देय होगा, जो लगभग २० मिनट में एस्सेलवर्ल्ड पहुँचायेगी। एस्सेलवर्ल्ड से ग्लोबल पगोडा तक ५-७ मिनट में पैदल चल कर पहुँच जायेंगे।

२. ऐसे ही बोरीवली रेल्वे स्टेशन से पश्चिम की ओर उतर कर बस रूट नं. २९४ और २४७ की बसें गोराई क्रीक तक ले जायेंगी। यहां भी बस के लिए रु. ४.५० और ऑटोरिक्शा के लिए रु. २२ देना होगा। गोराई क्रीक की जेटी से एस्सेलवर्ल्ड के लिए उपरोक्त प्रकार से फेरी के लिए रु. २५ प्रति व्यक्ति देय होगा।

३. भाइंदर रेल्वे स्टेशन से भी बस रूट नं. ४, एस्सेलवर्ल्ड कार-पार्क एरिया तक ले जाती है। वहां से १५ मिनट पैदल चलना होगा अथवा अपने साधन से आने पर सीधे ग्लोबल पगोडा तक पहुँच सकते हैं।

४. हवाई मार्ग से आने पर सांताक्रुज हवाई अड्डे से कार-टैक्सी लेकर मुंबई-अहमदाबाद हाइवे से भाइंदर होते हुए सीधे ग्लोबल पगोडा पहुँच सकते हैं। टैक्सी खर्च रु. ५०० से ७०० तक आयेगा।

पुणे विश्वविद्यालय में पालि प्रशिक्षण

प्रसन्नता का विषय है कि पुणे विश्वविद्यालय ने अपने इस वर्ष के प्रशिक्षण सत्र में 'पालि' का नया विभाग जोड़ा है। विद्यार्थियों को पालि में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह उत्कृष्ट अवसर होगा, जहां पालि में स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की जा सकेगी। इस प्रकार पटिपत्ति यानी विपश्यना साधना के साथ-साथ परियत्ति यानी भगवान की वाणी के शास्त्रीय ज्ञान से भी लोग परिचित हो सकेंगे, प्रवीण हो सकेंगे। सचमुच धर्मोदय का सही समय आ गया है। प्रास्पेक्टस तथा अधिक जानकारी के लिए - विभागाध्यक्ष, पालि विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (महाराष्ट्र) से संपर्क करें।

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य गुरुजी का प्रवचन 'हंगामा' टीवी चैनल पर

प्रतिदिन प्रातः ४:३० से ६ बजे तक पूरा प्रवचन एक साथ प्रसारित किया जा रहा है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकते हैं।

आस्था टी. वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः** ९:४५ बजे प्रसारित हो रहे है।

मंगल मृत्यु

☆ पुणे के श्री नारायण चंद्र बिश्वास साधना में पक कर धर्मसेवा में जुट गये। सन १९९८ में उन्हें सहायक आचार्य नियुक्त किया गया और सन २००१ से वे वरिष्ठ सहायक आचार्य के रूप में अपनी सेवाएं देने लगे। कुछ समय से वे मुंबई के ठाणे में रहने लगे थे। विगत २३ सितंबर, २००६ को यहीं पर उन्होंने अंतिम सांस ली। असीम धर्मसेवाओं के बल पर उनकी सद्गति निश्चित है। उनका मंगल हो!

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. Dr. Daniel Mayer, *USA*
   To serve Dhamma Santi, Brazil

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Mr. Tikiri Bandara Wijesinghe, *Sri Lanka*
2. Mr. Lama Hewage Chandrasena, *Sri Lanka*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री समीर पटेल, इगतपुरी / यू.के.
2. Ms. Sieglinde Drabczynski, *Germany*

दोहे धर्म के

आज नमन का दिवस है, अंतर भरी उमंग।
श्रद्धा और कृतज्ञता, विमल भक्ति का रंग॥
ग्रहण करूं गुरुदेवजी, ऐसी शुभ आशीष।
धर्म बोधि हिय में धरूं, चरण नवाऊं शीश॥
गुरुवर! तुम मिलते नहीं, धरम गंग के तीर।
तो बस गंगा पूजता, कभी न पीता नीर॥
यदि गुरुवर मिलते नहीं, बरमा देश सुदेश।
तो धन के जंजाल में, जीवन खोता शेष॥
पथ भूला दिग्भ्रम हुआ, भटक रहा अकुलाय।
धन्य! धन्य! गुरुदेव ने, सतपथ दिया दिखाय॥
बाहर बाहर भटकते, जीवन रहा गँवाय।
धन्य भाग! गुरुवर मिले, सतपथ दिया दिखाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः ०२२-२४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धन्यभाग गुरुदेवजू, पकड़ी मेरी बांह।
मुक्ति प्रदायक पथ दियो, धरम स्तूप री छांह॥
गुरुवर री करुणा जगी, हुयो किसो कल्याण।
प्यासै नै इमरत मिल्यो, मिल्यो धरम वरदान॥
सतगुरु तो किरपा करी, दियो धरम रो नीर।
धोयां सरसी आप ही, अपणो मैलो चीर॥
सतगुरु दीनी साधना, धोवण चित्त-विकार।
धोतां धोतां आप ही, खुलै मुक्ति रो द्वार॥
रोम रोम किरतग हुयो, रिण न चुकायो जाय।
जीऊं जीवन धरम रो, यो ही एक उपाय॥
गुरु तो पंथ दिखाणियो, दीन्यो पंथ दिखाय।
मंजिल आपां पूगस्यां, चाल्यां अपणै पांय॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोनः (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्सः (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. बुद्धवर्ष २५५०, आश्विन पूर्णिमा, ७ अक्तूबर, २००६

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. 'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- **LII/RNP-WPP-03**

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org